RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

नवम्बर–2025 | वर्ष – 17 | अंक : 10 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख –
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

अम्बेडकरवाद के पुनरुत्थान के लिए डी-एस4 का केन्द्र बिन्दु होना है।

साथ के दिये गये दो ग्राफ में दिल्ली महानगर परिषद व नगर निगम के लिए 5 फरवरी, 1983 को हुए चुनावों में, अम्बेडकरवादी संगठनों को मिले वोट दर्शाये गये हैं। बड़ी संख्या में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या को और उनके द्वारा बाबा साहब अम्बेडकर के अनुयायी होने के दावे को ध्यान में रखते हुये, इन अम्बेडकरवादी संगठनों को मिले वोटों की संख्या इतनी कम है कि देखकर आश्चर्य होने लगता है। अम्बेडकरवादी वोटों पर प्रथम और मुख्यरूप से दावे को ध्यान में रखते हुये, रिपब्लिकन पार्टी के विभिन्न गुटों की उपलब्धि पूरी तरह से शोकपूर्ण प्रतीत होती है। ग्राफ को देखने से और अम्बेडकरवादी संगठनों की तुलनात्मक अध्ययन करने पर, डी-एस4 की थोड़ी उपलब्धि भी बहुत ऊँची दिखाई देती है। केवल एक नजर से देखने पर ही रिपब्लिकन पार्टी के विभिन्न गुटों की बहुत कम स्थिति डी-एस4 के टखनों में डगमगा रही प्रतीत होती है। ऐसा लगता है कि वे डी-एस4 की टांग खींचने के अपने कार्य एवं वे-समझ प्रयत्नों में पूरी तरह असफल रहे।

लगभग 15 वर्ष पहले से ही जबसे मैं अम्बेडकरवाद के सम्पर्क में आया हूँ, मैं मिशन को पहुँचाने वाले धक्के एवं समय के गुजरने के साथ-साथ उसकी होती हुई दुर्दशा के प्रति काफी चिन्तित रहा हूँ। लगभग 4 वर्ष पहले कांशीराम और उसकी बामसेफ ने अम्बेडकरवाद के पुनरुत्थान के बारे में काफी गहराई से सोचना प्रारम्भ किया। 14 अप्रैल, 1979 को हमारे मुखपत्र 'दी आप्रेस्ड इन्डियन' में मैंने बड़े साहसी लेख द्वारा बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों को नेक सलाह देते हुए कहा कि वे अपनी सारी शक्ति व साधन अम्बेडकर के पुनरुत्थान के लिए ही तेज करें। दलित-शोषित समाज की दिमागी बैंक हमारी बामसेफ ने विशाल देश के सारे प्रमुख क्षेत्रों में 10 स्थानों पर 'क्या अम्बेडकरवाद का पुनरुत्थान एवं अभ्युत्थान होगा।' विषय पर विचार-गोष्ठियाँ संचालित कीं और 13-14 जून 1979 को दिल्ली में परिसंवाद आयोजित किया था।

क्या कांशीराम वास्तव में अन्धा है?

ऊपर वर्णित एवं बहुत से प्रयत्न, कांशीराम और उसकी बामसेफ के द्वारा अम्बेडकर के पुनरुत्थान के क्रम में बाबा साहब के अनुयायियों को उत्तेजित, प्रोत्साहित एवं दिमागों को हिलाने के लिए किए गए। विभिन्न लोगों के भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियायें व्यक्त की।

अम्बेडकरवादी जनता ने आगे उत्साह से प्रत्युत्तर दिया और बामसेफ की प्रगति में सहायक रहें। आज जबकि बाबा साहब हमारे बीच में नहीं हैं तो उनके कारवाँ को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी बाबा साहब के जिन लेफ्टीनेंटों की थी, उन्होंने प्रश्न किये कि कांशीराम और उसकी बामसेफ, अम्बेडकरवाद के बारे में सोचने वाले और काम करने वाले होते हैं? अम्बेडकरवाद के ठेकेदार तो हम लोग हैं। इसलिए अम्बेडकरवाद के बारे में सोचना और कार्य करना उनका ही काम है। लेकिन सबसे अधिक उच्च कोटि का प्रत्युत्तर सर्वश्री एल.आर.बाली एवं भगवानदास के नेतृत्व वाले गुट की तरफ से आया। किताब बेचने वाले इस छोटे से गुट ने न केवल दृष्टि में सन्देह किया बल्कि कांशीराम और उसकी बामसेफ को अन्धा घोषित कर दिया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि अम्बेडकरवाद सारे देश में एक भ्रमणशील हाथी की तरह है और हाथी के प्रकार का बड़ा उद्देश्य साधारण दृष्टि वाले हर व्यक्ति को दिखाई देना चाहिए। लेकिन कांशीराम और उसकी बामसेफ अन्धे होने के कारण इसको न तो देख पा रहा है और न उसकी विशाल उपस्थिति को अनुभव कर रहा है। इसलिए अम्बेडकरवाद के अभ्युत्थान का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

पहले और बाद में

उस समय अम्बेडकरवाद के बारे में मेरे विचार उससे वर्षों पहले बड़े पैमाने पर अम्बेडकरवाद को पहुँचे आघात पर आधारित थे। अपने तर्कों के समर्थन में, 'अम्बेडकर में निहित विभिन्न पहलुओं' के उदाहरण उद्धरित किये थे। लेकिन बाबा साहब के लैफ्टीनेन्ट मुझसे सहमत नहीं हुये।

अब उन प्रयत्नों के 4 वर्ष बाद हमें बाबा साहब के लैफ्टीनेंटों की उपलब्धि की तरफ पुनः देखना चाहिए। जहाँ तक वर्तमान मुद्दे मिशन के राजनैतिक हिस्से का सम्बन्ध है उसके बारे में हमें अपनी तुलना रिपब्लिकन पार्टी के विभिन्न गुटों की उपलब्धि से ही करनी चाहिए। बहुजन संगठन 19 जुलाई, 1982 के अंक में प्रकाशित ग्राम, चार्ट और आंकड़े अच्छी तरह विस्तार से बताते हैं। इस अंक में दिये गये ग्राफ और आंकड़े भी रिपब्लिकन पार्टियों के विभिन्न गुटों की उपलब्धि पर प्रकाश डालते हैं। वर्तमान अध्ययन के लिए इतना ही उचित है। लेकिन सर्वश्री बाली एवं भगवानदास के नेतृत्व वाले गुट की उपलब्धि चन्द पंक्तियाँ और लिखने के लायक हैं। किताब बेचने वाले इस छोटे से गुट ने कांशीराम और उनकी बामसेफ को अन्धा घोषित किया था। यह अन्धा आदमी इस गुट की पिछले वर्षों की उपलब्धियों की तरफ देखता है तो जो कुछ भी इस अन्धे आदमी को दिखायी पड़ता है वह कुछ इस प्रकार है –

(1) कांशीराम और उसकी बामसेफ को अन्धा घोषित करने के बाद अपनी राजनीतिक पार्टी का नाम 1979 में ही 'संयुक्त अम्बेडकरवादी रिपब्लिकन पार्टी' रखा। इसके प्रमुख शिल्पकार एवं चित्रकार श्री भगवान दास ने जनवरी 1980 में पूर्वी दिल्ली से लोकसभा का चुनाव लड़ा था। ऐसा कहा जाता है कि उस निर्वाचन क्षेत्र के कुछ छः लाख से अधिक वोटों में उनको कुल 252 वोट मिले थे।

(2) मई 1981 में हरियाणा विधानसभा के चुनावों में भी उनके प्रत्याशी को लगभग इतने ही वोट मिले थे।

(3) मई 1980 में पंजाब विधानसभा के चुनावों में श्री बाली के नेतृत्व वाली रिपब्लिकन पार्टी के सारे प्रत्याशियों को कुल मिलाकर 2906 वोट प्राप्त हुये।

(4) अब फरवरी 1983 में सर्वश्री बाली, भगवानदास के ग्रुप का चुनाव मानो दिल्ली के चुनावों के दौरान डी-एस4 की टाँग खींचने के अपने प्रयत्नों में मानो वे डी-एस4 के पैरों को छू रहे हैं। आर.पी.आई. के इन गुटों की मार्फत, भारत के दलित-शोषित लोगों के आन्दोलन के पुनर्निर्माण तथा अम्बेडकरवाद के पुनरुत्थान के बारे में हमारी आशा मात्र उम्मीद रहेगी। अम्बेडकरवादी संगठनों की उपलब्धियों को दर्शाने वाले ग्राफों पर नजर डालने पर जनता का विश्वास डी-एस4 को इस चुनौती को उठाना है और अम्बेडकरवाद के पुनरुत्थान के लिए कठिन परिश्रम करना है। सच्ची उम्मीद की जाती है कि डी-एस4 अपनी इस जिम्मेदारी को समझेगा और भारत की दलित शोषित जनता की संतुष्टि के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करेगा।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4 अंक 6, 16 मई, 1983)

साभार :
मा. कांशीराम साहब
के ऐतिहासिक भाषण खण्ड-2
पेज संख्या 180 से 183 तक
ए. आर. अकेला

हमें अपना आन्दोलन अपने पैरों पर खड़ा होकर चलाना है– कांशीराम

(सिलीगुड़ी)

बामसेफ का उत्तर–पूर्व क्षेत्रीय दो दिवसीय सम्मेलन 11–12 सितम्बर, 1982 को सिलीगुड़ी के बाघाजतीन क्लब हाल में आयोजित हुआ। जुलाई मास के 'दि आप्रेस्ड इण्डियन' के अंक जो कि बंगाल विशेषांक था, जिसमें बंगाल की स्थिति पर प्रकाश डाला गया था उसका दलित समाज पर काफी प्रभाव पड़ा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बामसेफ के संस्थापक अध्यक्ष मा. कांशीराम जी ने कहा कि बामसेफ एक शिक्षित कर्मचारियों का संगठन है। जो लोग आज यह महसूस करते हैं कि उनकी आज की खुशहाली आज से 50–60 वर्ष पूर्व उनके भाईयों, बुजुर्गों द्वारा किये गये संघर्ष, त्याग और बलिदान के कारण है लेकिन आज वही वर्ग उपेक्षित है। उसी समाज के हम ऋणी हैं। वह ऋण हम उन्हें सम्मान की जिन्दगी देकर चुका सकते हैं। इस उद्देश्य को सामने रखते हुए बामसेफ का गठन किया गया है न कि कर्मचारियों की अपनी समस्याओं के लिए। जो इस विचारधारा से सहमत हैं वे इस संगठन के कार्य कर सकते हैं। आपने बताया कि जिस समाज के पास कोई साधन नहीं है ऐसे साधनहीन समाज को साधन जुटाने का काम बामसेफ द्वारा किया जाता है। इस पढ़े–लिखे वर्ग के पास बहुत दिमाग, हुनर और पैसा है। लेकिन हमारे समाज में ये विभिन्न तरह की प्रतिभायें मोतियों की तरह बिखरी हुई हैं। इन मोतियों को इकठ्ठा कर उससे एक शक्ति पैदा करना चाहते हैं, जिसकी हमारे समाज को आवश्यकता है। हमें अपना आन्दोलन अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा होकर चलाना है आज तक हमारे समाज के लिए जितने भी आन्दोलन चले हैं वे सफल इसलिए नहीं हुए या हो नहीं सकते थे क्योंकि उनमें सहारे के साथ–साथ इशारा भी होता है। अगर इशारा न माना जाये तो सहारा छीनकर आन्दोलन तत्काल समाप्त कर दिया जाता है। इससे हमें सबक सीखना होगा।

प्रतिनिधि सम्मेलन

12 सितम्बर के प्रतिनिधि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मा. कांशीराम जी ने कहा कि उत्तर पूर्व क्षेत्र बिल्कुल ही नया है जबकि हमारी गतिविधियाँ लगभग 10 साल पूर्व शुरु होकर बामसेफ का जन्म 6 दिसम्बर 1978 को हुआ, तबसे इस संगठन को बनाना, उसमें सुधार लाना और आगे की ओर बढ़ाने की प्रक्रिया शुरु है। यह सारी बातें हम इस तरह के सम्मेलन में न बताते हुये इसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अलग कैडर कैम्प का आयोजन करते हैं। आप लोगों को बामसेफ के विभिन्न अंगों के बारे में जानकारी करनी होगी तभी उसके प्रचार में सुविधा होगी।

प्रेस और पब्लिकेशन का महत्व बताते हुए मा. कांशीराम जी ने कहा कि आप बंगाली पेपर निकालने के लिये बहुत उत्सुक होंगे। परन्तु पेपर चलाना इतना आसान काम नहीं है। हमने हर चीजों का अच्छी तरह योजना बनाकर उसे ठीक समय पर कार्यान्वित करना है।

हमारे प्रेस और पब्लिकेशन की जरूरत 55 दैनिक, भारत के 32 जगह और 100 पत्रिकाएं और यू.एन.आई., पी.टी.आई. जैसी समाचार एजेन्सी है। यह हम 1990 तक पूर्ण करेंगे। जिसका बजट हमने 150 करोड़ रुपया रखा है। लेकिन यह हमारी तीसरे नम्बर की शाखा होगी। इससे भी बढ़कर हमें कार्य करना है। यह भी जरूरी है कि जितना हम बोझ उठाना चाहते हैं उसके बराबर ही हमारा प्रयत्न होना चाहिए इसका स्पष्टीकरण देते हुए मा. कांशीराम जी ने कहा कि अगर सारे भारत के लोगों को कपड़ा पहनाना है तो हैंडलूम पर काम करने के बात नहीं बनेगी। इसके लिए तो बड़ी–बड़ी मिलें लगानी होंगी, इसलिए हमें ध्यान और साहस बढ़ाना होगा। हमारे विभिन्न अंगों को चलाने के लिये विशेषज्ञों की जरूरत होगी।

क्षेत्रिय सम्मेलन का महत्व बताते हुए मा. कांशीराम जी ने कहा कि हमारा संगठन सरकार के समानांतर चलेगा। जैसा कि भारत को विभिन्न राज्य और राज्यों को जिलें में बांटा है उसी तरह से हमने भी विभाजन किया। लेकिन सरकारी कार्य से हमारी कार्य प्रणाली अधिक मजबूत करने के लिए तथा एक राज्य का दूसरे राज्य से सम्बंध के लिए हमने सारे राज्य की केन्द्र शासित प्रदेशों को 5 जोन में बांटा है। जब हम सारे भारत को संगठित करना चाहते हैं तो हमें अपनी कमियां और ताकत दोनों को ध्यान में रखना होगा।

जिला स्तरीय सम्मेलन में भाषा की असुविधा नहीं होगी। यह सम्मेलन क्षेत्रीय सम्मेलन की तैयारी करेगा। क्षेत्रीय सम्मेलन जोनल सम्मेलन को बढ़ायेगा और जोनल सम्मेलन में राष्ट्रीय सम्मेलन को सफल बनायेंगे। आज मध्य जोन सबसे आगे है बाकी जोन के कार्यकर्ताओं को अपने–अपने जोन को प्रभावशाली बनाने में जुटना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

मां. कांशीराम जी ने आगे कहा कि भारत की तरह दुनिया के कोने कोने में दीन दुःखी लोग पड़े हुए हैं और वे अपनी समस्या हल करने की कोशिश में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों से आपसी सम्बंध बनाना चाहते हैं ताकि हमारी समस्याओं का निवारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारा 1983 का वार्षिक अधिवेशन एक अंतर्राष्ट्रीय प्रयोजन होगा।

हमने यह निश्चय किया है कि हमें अपना आन्दोलन बिना बाहरी मदद से चलाना है इस धोखे में हमने व्यर्थ 25 साल गवायें हैं। हमारे भाई लोग जो कि झारखंड, शोषित समाज दल के प्रांतीय संगठन कई साल से चला रहे हैं आज तक सफल नहीं हुये। जिन नेताओं ने यह चलाया उसे उन्होंने दिश और गति दी लेकिन उनके पश्चात जो लोग आये वह बाहरी सहायता पर ही निर्भर रहे। जिसका नतीजा बिगड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। उसी तरह बाबा साहब अम्बेडकर को मानने वाले लाखों लोग हैं। दिन रात वह बाबा साहब की जयन्ती मनाते हैं, गाने गाते हैं। लेकिन जब वोट देने का समय आता है तो बाबा साहब की पार्टी छोड़कर कांग्रेस की ओर जाते हैं। अत्यन्त मार्मिक उदाहरण देते हुये मा. कांशीराम जी ने कहा कि 1980 के इलेक्शन के दौरान दक्षिण बंबई लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में जहाँ हमारी भारी संख्या है, **मा. आर. आर. भोले** कांग्रेस के टिकट पर चुनकर आये लेकिन करीबन आठ लाख मतदातों के इस निर्वाचन क्षेत्र से रिपब्लिकन पार्टी की ओर से खड़े उम्मीदवार अशोक नीले को सिर्फ 713 वोट पड़े। बाबा साहब के संघर्ष में कंधे से कंधा लगाकर लड़ने वाले भोले 1980 से महान गांधी भक्त हो गये। अम्बेडकरवाद का यह कितना बड़ा मजाक है। आज हमारी जो हालत हुई है इसका कारण यही है कि उनके कंधे पर बाबा साहब का मिशन चलाने की जिम्मेदारी थी उन्होंने उसे सच्चे दिल से नहीं लिया और न कोई साधन जुटाने की कोशिश की जो मिशन चलाने के लिए उपयुक्त हो। यही कारण है कि आज बाबा साहब का सपना चकनाचूर हुआ है। इसलिए हमें अपने पैरों पर खड़ा होना है हमें खुद को तैयार करना है।

बामसेफ और डी–एस4 का महत्व बताते हुये आपने कहा कि बामसेफ दलित–शोषित समाज की शक्ति बढ़ाने में कार्यरत रहेगी और डी–एस4 शक्ति प्रदर्शन का कार्य करेगी। हम 24 सितम्बर से सामाजिक क्रान्ति की शुरुआत पूना पैक्ट का धिक्कार करके पूना से प्रारम्भ करेंगे। हम सिर्फ धिक्कार ही नहीं करेंगे बल्कि हम उसमें से रास्ता ढूंढने को भी कोशिश करेंगे। मेरा यह विश्वास है कि डी–एस4 एक साल के अन्दर भारत की सबसे बड़ी संघर्ष शक्ति होगी। आपने कहा कि दुश्मन को सिर्फ गालियां देने से काम नहीं चलेगा हमें आत्म परीक्षण करना भी जरूरी है। आज तक दुश्मन ने हमारी सिर्फ कमजोरियों को देखा है और उसका नाजायज लाभ उठाया है। आज हमें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा जिससे हमारा दुश्मन हमारे रास्ते की रुकावट न बन सके।

पूना पैक्ट दलितों के विरुद्ध साजिश थी

24 सितम्बर से शुरु होने जा रहे डी–एस4 के कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए मा. कांशीराम ने कहा कि बाबा साहब अम्बेडकर ने कम्युनल अवार्ड में जो कुछ पाया वह गांधी के दलित विरोधी साजिश के कारण पूना पैक्ट में खोना पड़ा। बड़ी मजबूरी की हालात में उन्हें पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर करना पड़ा। इससे हमारे वोटों की कोई कीमत नहीं रही ओर उच्च वर्णीय लोगों के चमचे सिर्फ राजकीय अधिकार पा सके। पूना पैक्ट का धिक्कार और उसमें से मार्ग निकालना यह हमारी आज के हालात में बड़ा आवश्यक है, जो लोग इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए तैयार हैं उन्हें ही हम इसमें शामिल करेंगे।

राजनैतिक अधिकार, राजनीतिक दल से सुरक्षित

मा. कांशीराम जी ने कहा कि जब हमारे पास दीवारें नहीं थीं तो बाबा साहब ने कहा था कि 'जाओ और अपनी दीवारों पर लिख लो कि आपको शासनकर्ता जमात बनना है'। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये उन्होंने राजनैतिक दल की स्थापना की, लेकिन उनके जाने के बाद इस दल के कई टुकड़े हुये और हमारा वह राजकीय सपना अधूरा रहा। आज 6 राष्ट्रीय पार्टीयों में एक भी पार्टी दलित–शोषित लोगों की नहीं कही जा सकती। इसलिए हमारी राष्ट्रीय पार्टी होना जरुरी है। यह जिम्मेदारी हमने डी–एस4 पर डाली है। हमारा यह प्रयत्न होगा कि संघर्ष के साथ ही डी–एस4 एक साल के अन्दर हमें राष्ट्रीय पार्टी देने में सफल होगी।

हीरालाल विश्वास ने जागृति गीत सुनाये, दार्जिग जिले के संयोजक कल्याण सागर ने अतिथियों का स्वागत किया।

प्रतिनिधि सम्मेलन को नकुल मलिक (जिला 24 परगना), डॉ. जे. पी. मण्डल (कलकत्ता), बिलकन बारा (जलपाईगुढ़ी), पंगरआओ (नागालैण्ड), सुनील कुमार राय चौधरी (बांकुरा), चुराका (दिनाजपुर), के.के.मण्डल (सिलीगुढ़ी), भूपेन्द्र सरकार (हल्दीबाड़ी), एस.हाजिदा, किरनमई तालुकदार (कलकत्ता), प्रेम कुमार तिरुआ, नरेनदास आदि ने सम्बोधित किया तथा संचालन उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के संयोजन मा. एस. के. पाटिल ने किया।

(बहुजन संगठन, वर्ष 3, अंक 18, 18 अक्टूबर, 1982)

साभार :
मा. कांशीराम साहब
के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–2
पेज संख्या 66 से 70 तक
ए. आर. अकेला

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में दास प्रथा और सामाजिक न्याय

कौटिल्य का अर्थशास्त्र 300 ई. पू. की रचना है। यह काल घोर सामंतकाल था। इस काल में हिंदू वर्चस्व अपनी चरम सीमा पर था। जल, जमीन, जंगल, नदी, पहाड़, झरने सब कुछ सामंतों के हाथ में था। उस काल में जनता पर शासन करने वाले मुख्यतः 11 प्रकार के थे– पहली श्रेणी में ऋत्विक, आचार्य, मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज, राजमाता और पटरानी थे। ये भी अपनी सुख–सुविधा एवं ऐशोआराम के लिए 4000 रु. मासिक वेतन लेते थे। दूसरी श्रेणी में द्वारपाल, अंतःपुर रक्षक, आयुध अध्यक्ष, समाहर्ता और भंडार अध्यक्ष थे, जिनका वेतन 2000 रु. मासिक था। तीसरी श्रेणी में –युवराज के भाई, उन भाइयों की मालाएं, सूबेदार, मेजर, शहर, कोतवाल, व्यापार और कृषि अध्यक्ष, मंत्रिपरिषद के 12 अध्यक्ष, पुलिस अधीक्षक और सीमा निरीक्षक थे, इनका वेतन 1000 पण मासिक था। चौथी श्रेणी में इंजीनियर, हाथी, घोड़े और रवों के अध्यक्ष तथा कंटक शोधन अधिकारी थे। इनका मासिक वेतन 666 पण था। पांचवीं श्रेणी में पैदल सेना का अध्यक्ष, अश्व सेना, रथ सेना, गज सेना के अध्यक्ष, लकड़ी तथा हाथियों के जंगल के अध्यक्ष थे। इनका वेतन मासिक 333 पण थे। छठी श्रेणी में रथ शिक्षक, गज शिक्षक, चिकित्सक, अश्वशिक्षक, मूर्गा सूअर पालने वालों के अध्यक्ष थे। इनका वेतन मासिक 166 पण था। सातवीं श्रेणी में सामुद्रिक, शकुन बताने वाले ज्योतिषी, स्तुतिवाचक (रामायण–पुराण कथा वाचक), पुरोहित, पुरोहित के नौकर और शराब ठेकेदार थे, इनका मासिक वेतन 83 पण था। आठवीं श्रेणी में चित्रकार, खिलाड़ी, राजा के यश लेखक आदि थे। इनका मासिक वेतन 42 पण था। नौवीं श्रेणी में नट, नर्तक और गायक थे। इनका मासिक वेतन 21 पण था। दसवीं श्रेणी में साधारण कारीगर और कुशल शिल्पकार थे। इनका मासिक वेतन 10 पणथा। ग्यारवीं श्रेणी में बेगार करने वाले अकुशल श्रमिक, शिल्पकार, पौनी थे। इनका मासिक वेतन 5 पण था।

इस प्रकार वेतन के रूप में मंत्रिमंडल का खर्च 8326 पण, अन्य विकास खर्च 8000 पण तथा आयात खर्च 6000 पण मिलाकर कुल 22 हजार 326 पण धनराशि की मासिक आवश्यकता होती थी। आमदनी अठन्नी खर्च रुपैया वाली कहावत चरितार्थ थी। उपरोक्त ग्यारह प्रकार के कर्मचारी , अधिकारी, मंत्रालय और सभासद ही नहीं 4ः ब्राह्मण, पुरोहित पुजारी वर्ष 5ः क्षत्रीय टोटल निकम्मे थे। ये 7ः कमकर (शूद्र और दासों) पर पूर्णतया निर्भर रहते थे यही नहीं इन्हें तरह–तरह से प्रताड़ित कर इनकी आंतड़ी की रोटी तक शान–शौकत के लिए छीन ली जाती थी। विरोधी का गला काट लिया जाता था।

कौटिल्य (अर्थशास्त्र पृ. 442) लिखता है कि जनपद की स्थापना ऐसी होनी चाहिए कि उनमें नीच वर्ण (शूद्र और दास) की आबादी अधिक होनी चाहिए। इसको स्पष्ट करते हुए लिखा (अर्थशास्त्र–पृ. 77) है कि प्रत्येक जनपद में कम से कम सौ घर और अधिक से अधिक पांच सौ घर वाले ऐसे गांव बसाए जाएं जिनमें शूद्र तथा किसान अधिक हों। कौटिल्य ने स्पष्ट किया कि निकम्मों को खिलाने तथा राज्य के शासन–प्रशासन शान–शौकत के लिए शूद्र, दास आदि ही खून बहाकर धन पैदा करेंगे। वास्तव में शूद्र ही धरती के जीवन के आधार हैं। कौटिल्य को अच्छी तरह पता है कि शूद्र मर–मर कर कमाता है, और संभ्रांत वर्ग टांग पसारे खाता है। आज भी वैश्विकरण के युग में ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, कनाड़ा, अमेरिका आदि देश ऐसे ही स्थानों पर इन्हीं की जमीन छीनकर अपना विशाल साम्राज्य स्थापित करते हैं और आगे भी करते रहेंगे। शूद्र आज भी बेजुबान हैं।

कौटिल्य (अर्थशास्त्र–पृष्ठ 507) ने आगे लिखा है कि उस भूमि में चारों वर्णों के लोगों की स्थिति के संबंध में यह विचार कर लेना चाहिए कि सब तरह के सुख–दुख सहन करने वाले शूद्र, ग्वाले आदि नीची जाति के मनुष्यों वाली भूमि ही श्रेष्ठ होती है। क्योंकि खेती की अधिकता और निश्चित फलवती होने के कारण ऐसी भूमि सदा श्रेयकर होती है। शूद्र व्यक्ति खून–पसीना एक करता है इसलिए यह भूमि फलवती तो है किंतु किसके लिए? शूद्र की नीचता भी फलवती है तो सिर्फ उत्पादन के लिए वह उत्पादन जिसका वह अंश ही उन्हें प्राप्त हो पाता है जिनसे मात्र उनका जीवन निर्वाह ही हो पाता है। शायद भारत में कोई स्पार्टाकस पैदा नहीं हुआ।

श्रमिक वर्ग पसीना बहाते–बहाते जब आसक्त हो जाता है तो नाच–गाना आदि नाना प्रकार के मनोरंजन के द्वारा अपने को फिर अगले दिन खटने के लिए। तैयार करता है, किंतु इस पर भी कौटिल्य ने स्पष्ट शब्दों में रोक लगा दी है, संभ्रांत वर्ग जुआ, शराब, नंगा नाच को, क्लब की गणिका वृत्ति को उचित समझता है किंतु दास वर्ग जो मुख्य श्रमिक है, उत्पादन का को मनाही है। कौटिल्य (अर्थशास्त्र पृष्ठ 80/81) कहता है– गांवों में कोई भी नाट्यगृह, विहार तथा क्रीड़ाशालाएं नहीं होनी चाहिए। नट, नर्तक, गायक, वादक, भाण और कुशीलव आदि गांवों में अपना खेल दिखाकर कृषि आदि कार्यों में विघ्न उत्पन्न न करें, क्योंकि गांवों में नाट्यशालाएं आदि न होने से ग्रामवासी अपने–अपने कृषि कर्म में लगे रहते हैं, जिससे कि राजकोष की अभिवृद्धि होती है और सारा देश धन–धान्य से समृद्ध होता है।

तब भी और आज भी मालिक दासों से सिर्फ रात–दिन खटाना जानते हैं, भले ही वह काम करते–करते मर जाएं पर क्षण भर सुस्ता न सकें। मध्य प्रदेश की एक ग्रामीण रिपोर्ट के अनुसार जमींदार बीमार बंधुआ (दास) से भी काम कराता है, उसका कहना है कि बैल बीमार हो जाए तो दवा कराई जाती है, और दास बीमार होता है तो उसे यूं ही उसके हाल पर छोड़ दिया जाता है, क्योंकि सामंतो के लिए बैल की कीमत दास से अधिक है, क्योंकि उस बैल की कीमत चार दास मिलते हैं।

कौटिल्य सामंत चाकर हैं। लिखते हैं– नाबालिक शूद्र अथवा जन्मना शूद्र को बेचने अथवा गिरवी रखने के लिए ले जाने वाले रिश्तेदार पर यदि संबद्ध व्यक्ति 'उदर दास' नहीं है तो उस पर 12 पण का जुर्माना लगाया जाना चाहिए। (पतंजलि 11–4.10 पर भाष्य) अर्थात नाबालिग शूद्र को बेचा जाता था, अर्थात दास क्रय–विक्रय का बाजार खूब गर्म था। शूद्र यदि वैश्य को बेचे तो जुर्माना 240 पण, क्षत्रीय को बेचे तो 500 पण और यदि ब्राह्मण को बेचे तो उस शूद्र पर 1000 पण का जुर्माना और मृत्युदंड। क्रेता और साक्षी भी इन्हीं दंडों के भागी होंगे। म्लेच्छ अपने बच्चों को बेच सकते हैं या गिरवी रख सकते हैं, किंतु किसी आर्य को दास नहीं बनाया जा सकता। फिर भी परिवार को कारावास से बचाने के लिए अथवा संकटग्रस्त आर्यों की रक्षा के लिए किसी आर्य (शूद्र) को गिरवी रखने की है। जो अपने आप को गिरवी रखता है, यदि वह भाग जाए तो पकड़े जाने पर वह सदा के लिए दास रहेगा। जो किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा गिरवी रखा गया है, यदि वह दो बार भागता है तो वह पकड़े जाने पर सदा के लिए दास हो जाएगा। गिरवीदार गिरवी रखे लोगों के भाग जाने, मर जाने अथवा असाध्य रोगों से ग्रस्त हो जान पर उनके मूल्य का हकदार होता है। लेकिन यदि साहूकार गिरवी रखे लोगों से मुर्दा, कूड़ा–करकट, मूत्र अथवा जूठन उठवाए तो उसका पैसा नहीं मिलता। गिरवी रखी स्त्रियों के संबंध में भी यह बात लागू होती है। किंतु यदि नंगे व्यक्ति को स्नान करवाया जाए, पिटाई की जाए, उसका सतीत्व भंग किया जाए, उपचारिका का शील भंग किया जाए तो उसका मूल्य समाप्त हो जाने के कारण मुक्ति पाने की हकदार बन जाती है। (चाननाा–प्राचीन भारत में दास प्रथा) (पृ. 65 पर) कौटिल्य ने जो नौ प्रकार के दास 1. ध्वाहृत : ध्वज के साथ लाया हुआ 2. उदर दास : पेट का दास 3. गृहजात–घर के उत्पन्न दास 4. क्रीतः खरीदा हुआ दास 5. लब्ध–पाया गया–प्राप्त दास 6. दाय आगत–विरासत में प्राप्त दास 7. दंडप्रगीत–न्यायिक निर्णय से प्राप्त दास 8. अहितकः गिरवी रखा दास 9. आत्म विक्रयी–अपने आपको बेचने वाला दास बताया है। ये सबके सब शूद्र दास हैं। ब्राह्मण को बताया गया है कि यह कभी किसी भी दशा में दास नहीं हो सकते। क्योंकि ये साक्षात देव हैं।

मुक्ति चाहने वाला दास जो जुर्माना अदा नहीं कर सकता। वह सदा स्वामी की कृपा पर आश्रित रहता है तथा शारीरिक श्रम कर अपनी दासता से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। उस स्वामी को दंड मिलेगा जो आठ वर्ष से कम उम्र का दास रखता है, अथवा उसका किसी अन्य देश में बिक्री करता है। यही दंड उस स्वामी के लिए भी है जो किसी गर्भिणी दासी को बिना उसका प्रसव कराए बेचता है। ऐसी दशा में क्रेता और साक्षी दोनों दंड के भागी होंगे। रिश्तेदार के दास की वस्तुओं को पाने का पूरा हक है। रिश्तेदार न होने पर वह मालिक की सम्पत्ति ही रहता है। किसी दासी और मालिक से पैदा हुआ पुत्र और वह दासी स्वतंत्र समझे जाएंगे किंतु उस दासी और उसके बेटे को दासता मिल सकती है। स्वामी से संपत्ति अथवा पत्नी और पिता का अधिकार कभी नहीं।

उस व्यक्ति के लिए 12 पणों का दंड है। जो पहले से स्वतंत्र किए जा चुके दास या दासी को उनकी इच्छा के विरूद्ध बिक्री या गिरवी के लिए लेता है। सबसे जो विचारणीय पक्ष है वह यह कि दास, दासी के द्वारा लगाया गया कोई भी अभियोग न्यायालय भी नहीं सुनेगा। न्यायालय सिर्फ मालिक की सुनता है, दास, दासी अथवा गुलाम की नहीं। अपने कौमार्य को स्वयं भंग कराने वाली स्त्री राजा की दासी होती है। यदि कोई व्यक्ति आपदकाल में किसी स्त्री की रक्षा की हो या अकाल या दरिद्रता–भुखमरी के समय सहायता की हो तो वह व्यक्ति उस स्त्री को अपने घर रखकर भोग सकता है। किसी गरीब असहाय व्यक्ति के कहने पर वह अपनी स्त्री, पुत्री अथवा भगिनी की देखभाल नहीं कर सकता तो स्वामी उसको बलपूर्वक भोग सकता है। कोई स्त्री जंगल में बिछुड़ गई हो, खो गई हो डूब रही हो और उसे संभ्रांत व्यक्ति बचा लेता है तो उसे उस स्त्री को भोगने का संपूर्ण अधिकार है। साहूकार बंधक रखी स्त्री का उपभोग कर सकता है, ध्यान रहे वह खोए नहीं।

स्वतंत्र व्यक्ति, देवताओं, ब्राह्मणों आदि की वस्तुओं (दास–दासियों) को छोड़कर अन्य सभी वस्तुओं (दास–दासियों) का राजा की अनुमति से उपभोग किया जा सकता है। ब्राह्मण के दोषी होने पर राजा तपे लोहे से दाग लगवा कर उसे निष्कासित कर देगा अथवा खानों में मजदूरों के साथ काम पर लगाकार काम करवाएगा (चाननाा–वही, पृष्ठ 120–121)

राजा के दास–राजा अपने राजभवन में सैकड़ों और कभी–कभी तो हजारों दास–दासियां रखते थे। सामंत, पुरोहित, सेनापति, सैनिक–इन राज दासियों का समान रूप से राजा से आंख बचाकर उपभोग करते थे। कौटिल्य ने विस्तृत रूप से इनका वर्णन किया। 1. जो दासियां अंतःपुर की हैं केवल उन्हीं को अंतःपुर के साथ संबंध रखने दिया जाएगा। 2. जब राजा सोकर उठे तो दासियां धनुष बाण लिए राजा को घेरे रहें। 3. दासियों को स्नान कराना चाहिए, तेल मालिश करनी चाहिए, बिस्तर लगाने, कपड़े धोने और माला गूंधने का काम करना चाहिए। 4. भंडार गृह से टूटे और निकृष्ट अन्य दास, दासियों और रसोइये को देने चाहिए। दास (शूद्र) विष्टि होते हैं, इनसे बेगार ली और जूठन दी जा सकती है।

उस वेश्यादासी को अब भोग योग्य नहीं रही कोष्ठागार अथवा रसोई में काम देना चाहिए। वेश्यामाता, प्रशिक्षणस्थ वेश्या और रूप दास पर प्रहार के लिए अर्थदंड और वेश्यादासियों को विविध कला की शिक्षा देने वाले को

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

राजा की ओर से वृत्ति दी जाएगी। दासियां गुप्त सूचनाएं भी देती रहें। अनेक हलों से जोते जाने वाले, अपने खेतों पर (राजा) दासों, नौकरों और दंड प्रतिकर्ताओं से बुवाई का काम करवाएंगे। दासों और नौकरों को बुवाई में उनके भाग के अनुसार सवा पण प्रतिमास और साथ ही चावल का भात दिया जाना चाहिए।

निजी दास रखने वाले संभ्रांत लोगों, ब्राह्मण, कुदाक, ताल्लुकेदार, भूपति, जमींदार आदि को कौटिल्य ने सलाह दी है कि राजा को यह मालूम होना चाहिए कि किस ग्राम में कितने और किस वर्ण के दास हों तथा मालिक की बात न मानने, आज्ञा पालन न करने पर दास–दासी की तो दंड दिया ही जाएगा, उसके रिश्तेदारों को भी दंड दिया ही जाएगा, उसके रिश्तेदारों को भी दंड दिया जाएगा। यदि पूर्व मालिक नए मालिक से अपना दास अथवा दासी पुनः प्राप्त करना चाहे तो मात्र 5 पण देकर खरीद सकता है। कौटिल्य की ओर से यह आदेश है कि जो व्यक्ति दास, बौद्ध भिक्षाओं तथा शूद्र संन्यासिनों को देख कर्मों और पितृ कर्मों में भोजन कराए उस पर सौ पण दण्ड दिया जाए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–341)।

वैसे तो ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र को छोड़ सभी म्लेच्छ हैं। किंतु कौटिल्य ने ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य को छोड़ सबको (शूद्र, दास–कमकर) को म्लेच्छ कहा है और यह भी आदेशित किया है कि म्लेच्छ भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए (अर्थशास्त्र–788)। इसको कौटिल्य (अर्थशास्त्र–पृ. 311) ने स्पष्ट किया है कि म्लेच्छ अपनी संतान को बेच अथवा गिरवी रख सकते हैं, इसमें कोई दोष नहीं है, किंतु आर्य किसी भी हालत में गुलाम नहीं जा सकती। यही नहीं अपने आपको बेच देने वाले आर्य पुरुष की संतान आर्य ही समझी जाएगी। अपनी कीमत चुकता कर वह अपनी आर्य श्रेणी में आ सकता है (अर्थशास्त्र–पृष्ठ 312–313)।

सभी आर्यों की तरह दुष्ट मानसिकता वाले कौटिल्य ने लिखा है कि – हृदय की बात को छिपाकर बनावटी बातें करने वाला अनार्य (शूद्र) है। (अर्थशास्त्र–526/798) अनार्य (शूद्र) व्यक्ति की मित्रता से आर्य व्यक्ति की शत्रुता अच्छी है। (अर्थशास्त्र पृष्ठ–486–797) तथा अनार्य (दास–शूद्र) को अपने तिरस्कार का भय नहीं रहता (अर्थशास्त्र पृष्ठ संख्या 261–787)। कानून के संबंध को कहा है कि संप्रभु की आज्ञा ही कानून है। अथवा विक्षिप्त तुलसी की सार्थक दो पंक्तियां हैं– 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' कौटिल्य ने अपनी समरयपना के मद में यह आग उगला है। यदि वह किसी वेश्या का बेटा होता और किसी कोठे पर दलाली करता तो यह कदापि न लिखता और न अपनी संप्रभुता की लम्पटता को दर्शाया है। तभी यह कहता है कि– जिस अपराध के लिए शूद्र बध्य है वहीं उसी अपराध के लिए ब्राह्मण हो तो उसके वध के बारे में सोच भी नहीं जा सकता (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–50)। ब्राह्मण तो समस्त प्रकार के अपराध के लिए स्वर्ग से आया है, और उसको सजा नहीं मिलेगी वह ऊपर की ही अदालत से लिखवा कर लाया है। कहा भी है कि यदि पुरोहित (ब्राह्मण) से अभ्यंतर कोण जैसा महान अपराध हो जाए तो भी उसका वध नहीं करना चाहिए। क्योंकि ब्राह्मण वध का निषेध है (अर्थशास्त्र पृ. 603)। शूद्र द्वारा ब्राह्मणी स्त्रियों से उत्पन्न पुत्र चांडाल कहलाते हैं। इसमें ब्राह्मणी का रक्त शामिल है। अतः यदि वह गुप्तचर है तो उसका भी वध नहीं किया जाना चाहिए (अर्थशास्त्र पृ. 284) गुप्तचर है तो।

वेद में ब्राह्मण का वध पांच महापातकों में गिनाया गया है – **स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिपंश्च गुरोस्तल्पमावसन् ब्रह्माहा चैते पतन्ति चत्वारः पच्चमश्चाचंर स्तैरिति छान्दोग्योपनिखर–5/10/9** किंतु आदिपर्व–महाभारत की कथा है–अपनी माता विनता को उसकी सौत सर्पों की माता कद्रू की दासता से मुक्त करने के लिए गरुड़ अमृत लाने चले, क्योंकि सर्पों ने अमृत पाने पर ही उनकी माता को मुक्त करने को कहा था–**श्रुत्वा तम ब्रुवन सर्पा आहारामृतोजसा, ततो दास्याद् विप्र मोक्षो भविता तव खेचर** – (महा–आदि 27/16)। चलते समय उन्होंने माता से वहां मिलने वाली कोई अपने खाने योग्य वस्तु पूछी। विनता ने वहां समुद्र के किनारे एकांत में स्थित निषादों की एक बस्ती बताई और कहा कि वहां हजारों निषाद रहते हैं। तुम उन्हें खाना (वही–28/2) परंतु ब्राह्मणों को मारने का कभी विचार भी मत करना (न च ते ब्राह्मण हन्तुं कार्या बुद्धिः कथच्चन महाभारत–आदि पर्व–पृष्ठ 28/3)।

गरुड़ के पूछने पर ब्राह्मणों का लक्षण बताती हुई विनता ने कहा– जो तुम्हारे कंठ में पहुंचकर आग के अंगारे की तरह जलने लगे तथा तुम्हारी जठाग्नि जिसे पचा न सके उसे तुम ब्राह्मण समझना–यस्ते कण्ठमनुप्राप्तो निर्गीर्णं, बडिशं **यथा, देहदंगारवत् पुत्र तं विद्याद् ब्राह्मणर्षभम्, जठरे न च जीर्येद् यस्तं जानीहि द्विजोत्तमम** (वही–महा–आदि–28–10–12)।

गरुड़ ने समुद्र के किनारे जाकर अपनु मुंह को बड़े विस्तार के साथ फैला दिया। उसमें निषाद अपने आप समाने लगे। संयोग से एक ब्राह्मण भी अपनी निषाद कुलोत्पन्ना भार्या के साथ उनके कंठ में पहुंच गया। जिससे गरुड़ का कंठ जलने लगा। तस्य कण्ठमनुप्राप्तो ब्राह्मणः सह भार्यया, दहन–दीप्तः इवांगारः..... (महा. आ. प. 29/1) घबराकर गरुड़ ने उसे शीघ्र पत्नी सहित बाहर चले जाने को कहा। बाहर आकर ब्राह्मण ने अनेक आशीष दिए।

कौटिल्य का नाम चाणक्य था किंतु उसकी कुटिलता के कारण उसे कौटिल्य कहा गया। नाम के अनुसार उसका मन काला था, तन उजला। उसने लिखा है कि जो–जो शूद्र (चांडाल) आर्य स्त्री (ब्राह्मणी, क्षत्राणी और वैश्या) को छुए उस पर सौ पण का जुर्माना (दंड) दिया जाए (अर्थशास्त्र पृष्ठ–341)। और यदि वही शूद्र (चांडाल) ब्राह्मणी, क्षत्राणी या वैश्या के साथ संभोग कर देता है तो उसे प्राण दंड दिया जाए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–401)। मेरे मतानुसार समाज में आदिम साम्य–काल से ही दो वर्ग रहा है।

व्यक्ति वर्ग–एक	व्यक्ति वर्ग–दो
1. भेड़िया–सामंत, भूपति जमींदार	1. कुशल धूर्त श्रमिक / राजाश्रयी श्रमिक
2. बुच्चर–हिंसक पशु, बैल सूअर	2. श्रमिक / शिल्पकार / कृषि श्रमिक / परजीवी श्रमिक
3. जल्लाद–जांगल शिकारी, मंत्री, पुरोहित, दरबारी लेखक आदि	3. गौ (गाय), श्रमिक / घरेलू श्रमिक / गृहिणी / यौन, श्रमिक / उदर श्रमिक आदि

कौटिल्य व्यक्ति वर्ग एक है। यही नहीं, मनु पराशर, याज्ञवल्क्य, तुलसी, वाल्मीकि, व्यास और सारे हिंदू (ब्राह्मणवादी) वर्ग एक के ही हैं। चाहे वह आर्थिक रूप से कितना ही विपन्न क्यों न हों। चाहे वह सर्प दिवस का सांप ही क्यों न हो, विष में कमी नहीं हो सकती। बढ़ता ही जाता है। वर्णी कौटिल्य लिखता है। शूद्र का एक ही धर्म है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की सेवा। खेती, पशुपालन, व्यापार, शिल्प, गायन, वादन, चारण–भाट आदि (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–10)।

जब कोई ब्राह्मण चातुर्वर्ण्य समानता, एकता और बंधुत्व की बात करता है तो मैं कहता हूं भेड़िया यही है, कौटिल्य जीने और मरने में साथ नहीं है, न साथ चाहता है, खान–पान, बेटी–रोटी का, उठने–बैठने का संबंध नहीं चाहता है, यहां तक कि मुर्दाघाट भी एक नहीं चाहता है, कौटिल्य ही नहीं समस्त ब्राह्मणवाद चाहता है कि श्मशान तक अलग–अलग हों। नगर के उत्तर या पूरब में श्मशान होना चाहिए और दक्षिण दिशा में शूद्रों (छोटी जाति) का शमशान होना चाहिए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–93) और जो इस नियम का उल्लंघन करे उसे प्रथम साहस 100 पण का दंड देना चाहिए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–93)।

ब्राह्मण को किसी अपराध में मृत्युदंड या ताड़न दंड न दिया जाए (अर्थशास्त्र पृ–397)। यदि पुरोहित से ऐसा कोई बड़ा अपराध हो जाए तो भी उसका वध नहीं करना चाहिए। क्योंकि ब्राह्मण का वध निषिद्ध है (अर्थशास्त्र पृ. 603)। अगर ब्राह्मण को दंड दिया भी जाए तो इतना कि सिपाही इनको इधर–उधर दौड़ा–फिरा दें (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–378)। यही नहीं जो इन नियमों का उल्लंघन करे या कराए उसको उत्तम साहस का दंड दें (अर्थशास्त्र पृ. 378)।

शूद्र वर्ण का यशगान कौटिल्य इन शब्दों में करता है–जैसा कुल होता है, वैसा ही आचार होता है (अर्थशास्त्र–पृ. 795)। प्रबुद्ध शूद्रों के लिए जो पढ़–लिख कर अच्छा बने हुए हैं। कितना ही संस्कार क्यों न किया जाए, नीम आम नहीं बन सकता (अर्थशास्त्र पृ. 795)। शूद्रों कं संबंध में कैसी सूक्ति गढ़ी है। देखिये– नीच पुरुषों को अपमानित होना ही भला लगता है (अर्थ पृ. 784)। नीच पुरुष को कभी कभी सुमति न देनी चाहिए (अर्थ पृ. 784)। नीच पुरुष की विद्याएं उसे पाप कर्म में प्रवृत्त करती हैं (अर्थ. पृ. 788)। नीच और उत्तम व्यक्ति में परस्पर विवाह संबंध नहीं हो सकता (अर्थ. पृ. 788)। शिल्पी लोग प्रायः ईमानदार नहीं होते। (अर्थशास्त्र–पृ. 309)।

अदालत को कौटिल्य का आदेश है, वकील और पेशकार तक को आदेश है कि वे कौटिल्यीय शासन पद्धति का पूर्णतया पालन करें। एक गवाही के लिए कौटिल्य लिखता है कि पानी से भरे घड़े के पास ब्राह्मण को शपथ के लिए ले जाया जाए। यदि ब्राह्मण गवाह हो तो 'सच बोलो' इतनी भर शपथ दिलाई जाए...यदि गवाह शूद्र हो तो उसके सम्मुख कहा जाए 'देखो यदि सच न बोलो तो जन्म–जन्मांतर का तुम्हारा सारा पुण्य राजा को प्राप्त हो, यदि तुमने झूठ बोला तो तुम्हें निश्चित ही दण्ड मिलेगा।' बाद में भी सुनकर देखकर मामले की जांच पड़ताल की जाएगी (अर्थशास्त्र पृ. 333)। यानी की 'सच बोलो' कह देने भर से ब्राह्मण सब कुछ सच–सच उगल देगा और शूद्र सब झूठ बोल देगा, इसलिए शूद्र को लोक–परलोक तथा पुनः जांच–पड़ताल की धमकी जाती है, डराया जाता है।

कौटिल्य को शूद्र सेना तो चाहिए पर विश्वास नहीं है, कौटिल्य यह भी मानता है कि ब्राह्मण सेना एकदम निकम्मी है, शत्रु ब्राह्मण सेना को नमस्कार कर सीमा पार कर सकती है। (अर्थशास्त्र पृ. 600) कौटिल्य कहता है–शूद्र सेना श्रेष्ठ है। यदि इनमें बहादुर हों– (अर्थ. पृष्ठ वही–600) कि शूद्र (आटविक) सेना के लिए अटवी बल की अपेक्षा अमित्र बल अधिक श्रेष्ठ होता है, क्योंकि यह आर्यगुणों से संपन्न एवं विश्वस्त पुरुषों के नेतृत्व में रहता है, किंतु अटवी बल के संबंध में ऐसा नहीं हैं, ये दोनों सेनाएं शत्रु बल को लूटने के लिए बड़ी उपयुक्त हैं, क्योंकि यदि उन्हें युद्ध में लगाया जाए या विपत्ति में सहायतार्थ नियुक्त किया जाए तो आस्तीन के सांप की तरह सदा ही उनसे भय बना रहता है (अर्थशास्त्र पृ. 599–600)। अतः स्पष्ट है कि कौटिल्य काल क्रूरतम सामंतीकाल है। जहां एक वर्ग सिर्फ कसाई है, और दूसरा सिर्फ बकरी। कौटिल्य विक्षिप्त और क्रूरतम ब्राह्मणवादी अर्थवादी समाजशास्त्री है।

प्रमुख संदर्भ टिप्पणियां –

1. कौटिल्य–अर्थशास्त्रम्–पृष्ठ– 599–600 /पृ–379/603/378/654 /309/ पृ–93/93/ 442/335/388/603/284/341/40/798
2. चाण्क्य प्रणीत सूत्र– 461/202/203/274/286
3. चंद्रिका प्रसाद शुक्ल–नैषध परिशीलन
4. मानव संस्कृति–श्यामाचरण दुबे
5. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास–ओम प्रकाश
6. डॉ. मदन मोहन सिंह–बुद्धकालीन समाज और धर्म
7. डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा–आदिवासी विकास

साभार :
शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास
पेज संख्या 231 से 239 तक
एस. के. पंजम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

नाग जाति की उत्पत्ति और चारित्रिक विशेषताएं

नाग जाति की उत्पत्ति

टोटिम की प्रथा भारतीय आदिवासियों की एक विशेषता थी जैसे कि रामायण में वर्णित वानर या रिक्ष, आदि पशुओं की पूजा करने वाली जातियां थीं यानी उक्त पशु उनके टोटिम थे। इसी प्रकार नाग लोग सांप की पूजा करते थे अथवा सांप उनका टोटम जंतु था इसलिए वे लोग नाग पुकारे जाते थे। पुरूष, तीन, पांच अथवा सात फन पहनते थे तथा नारियां केवल एक। ये फन कृत्रिम होते थे जैसाकि नाग पुरूष व नागिन स्त्रियों के चित्रों से प्रकट है। (देखें चित्र मुख्य पृष्ठ) मानववंश के विचार से ये लोग लम्बे सिर के भूमध्य सागर तटीय प्रकार (द्रविड़) तथा गोल सिर के अल्पाइन अथवा दोनो की संकर नस्ल से संबंधित थे जो पश्चिम एशिया से आए थे जिन्होंने सिंधुघाटी सभ्यता की स्थापना की थी। मगर कुछ विद्वान जैसाकि फ्राई पी. सोमरसेट हमें सूचित करते हैं कि मूलंरूप में अल्पाइन जाति बहुत प्राचीन काल में भारत से सुमेर गई। संभवतः वे पश्चिमोत्तर भारत अथवा अफगानिस्तान के मूल निवासी थे जो भारत में भागों का सबसे बड़ा केन्द्र था।

जे.ची.एच.वोगिल अपनी प्रसिद्ध रचना 'इंडियन सर्पेन्ट लोर' में भद्रवाह के नाग राजा नागपाल की कथा का वर्णन देते हैं जो कि मुगल सम्राट अकबर का समयुगीन था जिसमें वासुकी नाग का मुख्यतः वर्णन है–''राजा नागपाल, जब कि वह काश्मीर का मुखिया शासक था अकबर के दरबार में दिल्ली गया। वहां एक घटना घटी। राजा तथा सम्राट के भिश्ती पानी भरने कुएं पर गए तथा दोनों में से प्रत्येक चाहता था कि वह पहले पानी भरे। उस झगड़े का अंत यह हुआ कि शाही भिश्ती को कुएं में फैंक दिया गया। परिणाम स्वरूप राजा नागपाल को, राज दरबार में बादशाह के सम्मुख उपस्थित होने के लिए बुलाया गया। मगर उसने, अपने सेवक के बर्ताव का पक्ष, यह कह कर लिया कि पानी उसे वासुकी नाग की पूजा के लिये चाहिए था अगर, वह बादशाह के भिश्ती को पानी भरने की आज्ञा दे देता तो पानी अपवित्र हो जाता। अकबर ने उसे तिरस्कार से पूछा–'ये वासुकी नाग कौन है? और उसे बुलाकर–प्रमाणित किया जाए कि वह उस (बादशाह) से भी अधिक शक्तिशाली हैं। राजा ने अगले दिन ऐसा कर दिखाने का वायदा किया। और जब वह अगले दिन दरबार में पहुंचा तो एक पांच फन वाला नाग उसकी पगड़ी में से प्रकट हुआ और बादशाह को गद्दी से उतरने के लिए विवश कर दिया। अकबर बहुत डर गया और उससे कहा–''अगर वह नाग को वापिस बुला ले तो उसे एक वरदान देने का वायदा करता है।'' राजा ने ऐसा ही किया परिणामस्वरूप उसे शाही नौबत प्राप्त करने का अधिकार मिल गया जो आज तक भद्रवाह में वासुकीनाग के मंदिर में बजाई जाती है।''

यहां हम इस विचारणीय विषय पर नहीं जायेंगे कि क्या वास्तव में घटना ऐतिहासिक है? मगर हम इस घटना से बड़ी आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि नाग जाति तथा उसके राजा अकबर के काल (1556–1605 ई.) में अस्तित्व में थे यानी मात्र पांच सौ साल पहले। वह जाति तथा उसके महान राजा कहां चले गए? यद्यपि तक्षक नाग का वर्णन महाभारत (950 ई.) में है। इसका अर्थ हुआ नाग जाति भारत में 2500 साल तक जीवित रही और उसने शासन भी किया जिसका वर्णन हम आगे करेंगे। यह किसी राज परिवार द्वारा शासन करते रहने का सर्वाधिक लम्बा काल है। आगे हम नाग जाति की उत्पत्ति पर विचार करते हैं।

ईरान में नाग पूजा तथा नाग जाति

हम अगले पृष्ठों पर बतलाएंगे कि नाग पूजा तथा नाग जाति के पश्चिमोत्तर भारत के सबसे बड़े केन्द्र तक्षशिला में नहीं हुआ और यह अवश्य ही भारत में पश्चिम से आई होगी। जब हम ईरान के इतिहास पर नजर डालते हैं तो आश्चर्यजनक रूप में हमें नाग पूजा और नाग जाति के अस्तिव के अनेक प्रमाण वहां से मिल जाते हैं। जेम्स फैरगूशन' इसके प्रमाण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं–''सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा मनोरंजक व्यक्ति, पर्थिया के इतिहास में हमारे विषय से संबंधित जोहाक है। सभी प्रकार के वर्णनों के अनुसार वह अरब से आया तथा अपना पद्नाम बीवर–अस्प (Bivar-Asp) अपने 10,000 घुड़सवारों के रक्षकों से प्राप्त किया जो हमेशा उसके साथ रहते थे। (Glossary S. V. Dahaka) ताज अथवा ताजी, से उसकी वंशावली जिसके नाम के पीछे अकबर का नाम पड़ा है, दोनों बुन्डेहेज (Bundehesch) तथा मोजतिल (Windisch Mann, Zoroastriche Studian p. 30, 37c, 39) में दी है। उसके पिता के बारे में बतलाया गया है कि उसके पास मात्र भेड़ों के रेवड़ तथा पशुओं के झुंड ही थे, मगर उसने मध्येशिया को विजित कर लिया था तथा अपना निवास काबुल में बना लिया था। उसका राज्य अथवा राजपरिवार 1,000 साल तक चला जब कि उसे फेरीदून ने, गवाह, जो एक लोहार था की सहायता से गद्दी से नीचे उतार दिया जिसके बाद जेमशीद का मूलवंश दोबारा सत्ता में आया।

बिना किसी शंका के, फेरीदून की पहचान जेन्द–अवेस्ता के थ्राइटओना (Thraetaona) से की है, जिसे तीन सिरों वाले नाग दहाक का वध करने वाले के रूप में सम्मानित किया जाता है जो अन्गरामेन्यूज की बुरी शक्ति की उत्पत्ति था (Weber's Indische Studien Voll III p.416) जो अहिरमान के नाम से प्रसिद्ध है।

जोहाक के बारे में सभी मुस्लिम इतिहासकारों ने बतलाया है कि दो नाग उसकी पीठ से उगे हुए थे, एक प्रत्येक कंधे से, और आगे उन्होंने कहा है कि इन राक्षसों को शांत करने के लिए, यह आवश्यक था कि दो नौजवानों की प्रतिदिन बलि दी जाए ताकि उसके दिमाग को शांत किया जा सके। (Mojmil 156; Windischmann 37: Shah Nameg, Atkinson's Translation p.14). यह अब तक रहस्य ही था मगर जैसाकि अब हम देखेंगे कि सभी नाग जाति की नारियों के कंधों के मध्य में एक नाग होता था तथा भारत में सभी पुरूषों में एक साथ तीन, पांच अथवा सात नाग सिर पर होते थे। जोहाक संभवतः उनका एक पूर्व स्वरूप था जो औरतों का ठीक दो गुणित था तथा वह भी संभव है कि जेन्द अवेस्ता में तीन सिर थे (Tribus Orbibus Pareditum Tribus Capitibas, Masaudi III p.252 and the Mahomedans, on the contary always speak of two serpents borne on the shoulders of Dahak) जिसमें दो नागों के मध्य में एक आदमी का सिर भी था। हम हाल में इसकी उचित पहचान इसी तरह कर पाएंगे मगर हमें यह स्वरूप बहुत पूर्व का अथवा सर्व प्रथम कथाओं का दिखाई पड़ता है जैसाकि हम भारत में देखते हैं। मानवी बलियां वैसी ही हैं जैसी कि हमें नाग पूजा के साथ–साथ सारी दुनिया में देखने को मिलती हैं नाग पूजा का अंतिम चिन्ह जो कि पर्शिया में देखने को मिलता है वह है पेरसेपोलिस के पास नक्श–रूस्तम में एक उभरा हुआ चित्र (Bas-relief)। इस चित्र में, ओरमज्द राजा शाही का प्रतीक चिन्ह चक्र, आर्दिशीर बबेगन को, जो सस्सानियन राज परिवार का (226 ई.) पहला राजा है को भेंट कर रहा है। घोड़े के पैरों के नीचे, जिस पर कि देवता (ओरमज्द) बैठा है, अर्वेदन पड़ा है जो अंतिम पर्थियन राजा था जिसके सिर के गिर्द दो नाग लिपटे हुए हैं (Kerporter Vol I Plate xxiii; Flandin et caste, Voyage en Perse Plate CLxxxii) ऐसे नहीं कि संभवतः जोहाक के कंधों को सजाते हों, मगर अभी भी यह चिह्नित करने को महत्वपूर्ण है कि मूर्ति पार्थियनों की, जोहाक की घृणित जाति का प्रतिनिधित्व करती है जो कलंकित अहिरमान के अनुयायी थे जिसे ओरमज्द पैरों के नीचे दबोचता है जब कि राजशाही का चिह्न, आग की पूजा करने वाले जोरोस्ट्रानियन ससानियन को भेंट करता दिखाई पड़ता है।''

उपर्युक्त उभरे चित्र में ससानियन आर्यों का, ईरान के आदिवासियों, जो नाग पूजक थे, पर जीत का प्रतिनिधित्व करता दिखाई पड़ता है जबकि आर्यों ने उनसे सत्ता छीन ली थी। इससे एक अन्य रहस्य सम्मुख आता है कि फेरीदून की पहचान, निःशंक जेन्द–अवेस्ता के थाइटाओना के साथ की गई है, जिसका सम्मान तीन सिर वाले दहाक का वध करने के लिए किया जाता है। यह दहाक जो कि दुष्टशक्ति अन्गरामैन्यूज की उत्पत्ति था साधारणतः अहिरमान के नाम से जाता जाता है। अन्गरमैन्यूज की पहचान भारत के मानव या मानव्य से की जा सकती है जिसे भारत में नागों का पूर्वज माना जाता है।

फैरगूशन ने एक अन्य कथा दी है जिसके अनुसार नाग लोग ईरान से आए और अफगानिस्तान काबुल में स्थापित हो गए। वह लिखता है – ''जोहाक की जाति का एक अवशेष काबुल में बच गया दिखाई पड़ता है यह हमारे लिए सोसतौर से बहुत मनोरंजक बात होगी अगर हम उसके बारे में कुछ अधिक जानकारी प्राप्त करें क्योंकि यह भारत तथा पर्शिया में नागपूजा को जोड़ने वाली कड़ी दिखाई पड़ती है। मौजमिल के अनुसार जब ताज, जो अरबों का पूर्वज था, काबुल में आकर बस गया, उसके एक बेटे ने फेरीदून की बेटी से शादी कर ली तथा वह काबूल में बस गया उस जोड़े का बेटा रूस्तम का नाना था (Windischmann, 371) । हमें इससे आगे परिवार के बारे में सूचनाएं शाहनमेह में मिलती है। जब शाम का बेटा जाल काबुल गया तो उसने मिहराव, जो जोहाक का उत्तराधिकारी था को गद्दी पर बैठे पाया था उसकी बेटी रूद्रवेह के प्रेम में फंस गया। मुविद ने उसकी शादी रूद्रवेह से करने की मनाही कर दी क्योंकि काबुल का प्रमुख नाग राजा जोहाक के परिवार से संबंधि था पिता भी उक्त परिस्थितियों से, कि मनुचेहर विरोध करेगा, डर गया। संभव है जोड़े को आज्ञा न दे वह भी बिना किसी कारण के नहीं, क्योंकि राजा ने शाम को आज्ञा दी कि 'वह काबुल को आग और तलवार से विनष्ट कर दे खासतौर से मिहराव के घर को जो नाग जाति का तब शासक था तथा जो उससे संबंधित है सबको मौत के घाट उतार दें। (Atkinson's Translation of Shah Nameh p.77 et seq) संयोग से प्रेमी जोड़े के लिए कठिनाइयां समाप्त हो गईं और

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

उसका परिणाम यह हुआ कि रूस्तम का जन्म हुआ जो पूर्व की प्रेम कथा का आश्चर्यजनक चमकता सितारा था।''

उपर्युक्त कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आर्यों के भारत में आने से पूर्व, नाग जाति, जो अरब व बाबुल की मूलनिवासी थी पहले ईरान पहुंची तब काबुल (अफगानिस्तान की राजधानी) जो पश्चिमोत्तर भारत में स्थित तक्षशिला के बहुत निकट है। उनके इस प्रवेश के प्रमाण स्पष्टतया तक्षशिला से तलाश किए जा सकते हैं। तक्षशिला नाग जनजाति के राजा तक्षक की राजधानी थी, यह बात ध्यान में रखने की है कि सिंधुघाटी के लोग भी पश्चिमी एशिया यानी सुमेर से आए तथा वे लोग भी मूल रूप से उसी जाति (द्रविड़) से संबंधित थे।

प्रसिद्ध नृवंश शास्त्री, रोनाल्ड बी. डिक्सन ने, मानव अधिकारों के अवशेष तथा अन्य पुरातत्व मूल्य की वस्तुएं, जो कि प्राचीन काल की कब्रों की खुदाईयों से प्राप्त हुई हैं, के आधार पर एक बहुमूल्य रचना मानव जाति की ऐतिहासिक उत्पत्ति पर लिखी है। वह अपनी उपर्युक्त महत्वपूर्ण रचना के आधार पर ईरान के जातीय मूल तत्व का तथा आर्यों के सहसा हुए आक्रमण के परिणामस्वरूप भारत की ओर उनके भाग उठने का वर्णन प्रस्तुत करते हैं– ''हम संभवतया कल्पना कर सकते हैं कि सर्वाधिक प्राचीन, तलाश की जा चुकी उस क्षेत्र की जनसंख्या गोल सिर वालों की थी जो संभवतया खासतौर पर अल्पाइन प्रकार के लोग थे जिनकी बराबरी अनातोलिया के तथा उससे आगे के पश्चिमी क्षेत्र के लोगों से की जा सकती है। भाषा के विचार से ये लोग संभवतः अभारोपीय लोग थे। दक्षिण में फारस की खाड़ी के किनारे काली चमड़ी तथा जमे हुए बालों वाले साधारण सभ्यता के लोग रहते थे ..... जातीय विचार से, आर्य आक्रमण के मेरे विचार से दो परिणाम हुए – (1) पहला यह कि आक्रमणकारियों के दबाव के कारण, गोल सिर वाले कुछ लोग, दक्षिण–पूर्व की ओर सिंधु के डेल्टा की ओर धकेल दिए गए तथा वहां से प्रायद्वीप के पश्चिमी किनारे–किनारे नीचे चले गए। (2) उनकी एक शाखा संभवतः ओमान की ओर दक्षिणी अरब में चली गई जहां उन्होंने वहां की जनसंख्या में गोल, सिर वाले तत्व का भारी हिस्सा जोड़ दिया।

उक्त विचार को विभा त्रिपाठी, बी.एस. गुहा तथा आर.पी. चंदा की सहमति प्राप्त होती है कि ये गोल सिर वाले अल्पाइन ईरानी लोग यदु, तुरबस, अनु, द्रुहयु, पुरू आदि थे। इन अल्पाइन लोगों के प्रमाण हड़प्पा के कब्रिस्तान H तथा G की खुदाई में प्राप्त हुए हैं।

हम नाग जाति और विभिन्न राज परिवारों पर विचार करने से पूर्व, उनकी संघ पर आधारित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सैनिक व्यवस्था, जो उनके समाज की खास पहचान थी, पर विचार करते हैं।

साभार – भारत की आदिवासी नाग सभ्यता
एक महान आश्चर्य (डा0 नवल वियोगी)
पृ.सं. 10 से 14 तक

रहस्य प्रकट होता है

बॉब प्रॉक्टर
दार्शनिक, लेखक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन
रहस्य से आपको अपनी हर मनचाही चीज मिल जाती हैः खुशी, सेहत और दौलत।

डॉ. जो विटाल
मेटाफिजिशियन, मार्केटिंग विशेषज्ञ और लेखक
आप जो चाहे पा सकते हैं, कर सकते हैं, या बन सकते हैं।

जॉन असाराफ
उद्यमी और धनार्जन विशेषज्ञ
हम जिस चीज को पाने का चुनाव करें, उसे पा सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वह चीज़ कितनी बड़ी है।

आप किस तरह के मकान में रहना चाहते हैं? क्या आप करोड़पति बनना चाहते हैं? आप किस तरह का बिज़नेस बनना चाहते हैं? क्या आप ज्यादा सफलता चाहते हैं? अहम् सवाल यह है कि आप सचमुच क्या चाहते हैं?

डॉ. जॉन डेमार्टिनी
दार्शनिक, कायरोप्रैक्टर, उपचारक और व्यक्तिगत कायाकल्प विशेषज्ञ
यह जीवन का महान रहस्य है।

डॉ. डेनिस वेटली
मनोवैज्ञानिक और मानसिक क्षमता प्रशिक्षक
अतीत के जिन लीडर्स के पास रहस्य था वे इसकी शक्ति का ज्ञान स्वयं तक ही सीमित रखना चाहते थे और दूसरों को नहीं बताना चाहते थे। उन्होंने यह रहस्य लोगों को नहीं बताया। आम लोग काम–धंधे पर जाते थे, दिन भर काम करते थे और शाम को घर लौट आते थे। उनकी जिंदगी इसी चक्की पर चलती थी और उनके पास जरा सी भी शक्ति नहीं थी, क्योंकि रहस्य सिर्फ कुछ लोगों को ही मालूम था।

इतिहास में बहुत से लोगों के मन में रहस्य का ज्ञान हासिल करने की इच्छा जाग्रत हुई और कई जानकारों ने तो दूसरों तक यह ज्ञान पहुँचाने का तरीका खोजने की कोशिश भी की।

माइकल बर्नार्ड बेकविथ
भविष्यदृष्टा और अगेप इंटरनेशनल स्पिरिच्युअल सेंटर के संस्थापक
मैंने लोगों के जीवन में कई चमत्कार होते देखे हैं। वित्तीय चमत्कार, शारीरिक उपचार के चमत्कार, मानसिक उपचार और संबंधों के उपचार के चमत्कार।

जैक कैनफ़ील्ड
लेखक, शिक्षक, जीवन मार्गदर्शक और प्रेरक वक्ता
यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि मैंने यह जान लिया कि रहस्य पर अमल कैसे करना है।

रहस्य क्या है?

बॉब प्रॉक्टर
आप शायद यह सोच–सोचकर हैरान हो रहे होंगे, ''आखिर यह 'रहस्य' है क्या?'' मैं आपको बताता हूँ कि मेरे हिसाब से इसका क्या मतलब है।

हम सभी एक ही असीमित शक्ति से काम करते हैं। एक जैसे नियम हमारा मार्गदर्शन करते हैं। ब्रह्मांड के नैसर्गिक नियम इतने सटीक हैं कि हमें स्पेसशिप बनाने में जरा भी मुश्किल नहीं आती है, हम लोगों को चाँद पर भेज सकते हैं और हम यान के उतरने के पल को सटीकता से नियंत्रित कर सकते हैं।

आप भारत, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, स्टॉकहोम, लंदन, टोरंटो, मॉन्ट्रियल, न्यूयॉर्क या चाहे जहाँ रहते हों, हम सभी एक ही शक्ति, एक ही नियम से काम कर रहे हैं। इसका नाम आकर्षण है।

रहस्य आकर्षण का नियम है।

आपके जीवन में जो भी चीजें आ रही हैं, उन्हें आप अपने जीवन में आकर्षित कर रहे हैं। और वे उन तस्वीरों द्वारा आपकी ओर आकर्षित हो रही हैं, जो आपके मस्तिष्क में हैं। यानी जो आप सोच रहे हैं। आपके मस्तिष्क में जो भी चल रहा है, उसे आप अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं।

''आपका रह विचार एक वास्तविक वस्तु – एक शक्ति है।''

प्रोंटिस मलफ़ोर्ड (1834–1891)

दुनिया के महानतम शिक्षकों ने हमें बताया है कि आकर्षण का नियम दुनिया का सबसे शक्तिशाली नियम है।

विलियम शेक्सपियर, रॉबर्ट ब्राउनिंग और विलियम ब्लेक ने इसे अपनी कविता में सिखाया है। लुडविग वैन बीथोवन जैसे संगीतकारों ने इसे अपने संगीत में व्यक्त किया है। लियोनार्दो द विंची ने इसे अपनी पेंटिंग्स में उकेरा है। सुकरात, प्लेटो, रैल्फ़ वाल्डो इमर्सन, पाइथैगॉरस, सर फ्रांसिस बेकन, सर आइजैक न्यूटन, जोहानन वोल्फगैंग वॉन गेटे और विक्टर ह्यूगो ने इसे अपनी लेखनी और दर्शन में व्यक्त किया है। इसी कारण उनके नाम अमर हैं और उनकी महानता सदियों बाद भी कायम हैं।

यह रहस्य हिंदू धर्म, हर्मीटिक परंपराओं, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम में मौजूद है। यह बैबिलोन और मिस्त्र की प्राचीन सभ्यताओं की लेखनी और कहानियों में व्यक्त हुआ है। यह नियम युगों–युगों से कई रूपों में व्यक्त होता आ रहा है और इसे सदियों पुराने प्राचीन ग्रंथों में पढ़ा जा सकता है। इसे 3000 ईसा पूर्व में पत्थर पर उकेरा गया था। हालाँकि कुछ लोग इस रहस्य के ज्ञान को हासिल करना चाहते थे और उन्होंने इसे सचमुच हासिल भी कर लिया, लेकिन यह हमेशा मौजूद था और कोई भी इसे खोज सकता था।

नियम समय के साथ ही शुरू हो गया था। इसका अस्तित्व हमेशा था और हमेशा रहेगा।

यही नियम ब्राह्मांड की समूची व्यवस्था, आपने जीवन के हर पल और आपके जीवन के हर अनुभव को तय करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप कौन हैं या आप कहाँ हैं। आकर्षण का नियम आपके समूचे जीवन के अनुभवों को आकार दे रहा है। यह सर्वशक्तिमान नियम आपके विचारों के माध्यम से ऐसा करता है। आप अपने विचारों से आकर्षण के इस नियम को सक्रिय करते हैं।

1912 में चार्ल्स हानेल ने आकर्षण के नियम का वर्णन करते हुए कहा था, ''यह सबसे महान और सबसे अचूक नियम है, जिस पर सृजन का समूचा तंत्र निर्भर है।''

बॉब प्रॉक्टर
हर युग के बुद्धिमान लोगों को इस नियम का ज्ञान था। आप इसे प्राचीन बैबिलोनिया की संस्कृति में भी देख सकते हैं। उन्हें इसका ज्ञान था, हालाँकि यह ज्ञान बहुत कम लोगों के चुनिंदा समूह तक ही सीमित था।

इतिहासकार प्राचीन बैबिलोन संस्कृति की महान उपलब्धियों और प्रचुर समृद्धि का गुणगान करते नहीं थकते हैं। विश्व के सात आश्चर्यों में से एक हैगिंग गार्डन्स इसी संस्कृति की देन थी । इस कौम ने ब्रह्मांड के नियमों को समझा और उन पर अमल किया। इसी वजह से यह इतिहास की सबसे दौलतमंद कौमों में से एक बन गई।

बॉब प्रॉक्टर
क्या आप जानते हैं कि सिर्फ 1 प्रतिशत लोग 96 प्रतिशत धन कमाते हैं? क्या आप सोचते हैं कि यह सिर्फ संयोग है? यह तो पूर्व–निर्धारित है। उन्हें एक खास चीज का ज्ञान है। दरअसल उन्हें रहस्य का ज्ञान है और वही रहस्य अब आपको बताया जा रहा है।

इस रहस्य के प्रयोग से लोगों ने अपने जीवन में दौलत को आकर्षित किया है, चाहे उन्होंने यह सोच–समझकर किया हो या अनजाने में। वे प्रचुरता और दौलत के विचार सोचते हैं। वे अपने दिमाग में किसी विरोधी विचार को जड़े नहीं जमाने देते हैं। उनके सबसे प्रबल विचार दौलत के बारे में होते हैं। वे सिर्फ दौलत के बारे में सोचते रहते हैं और उनके दिमाग में इसके अलावा कोई चीज नहीं होती है। चाहे उन्हें इस बात का एहसास हो या न हो, दौलत संबंधी प्रबल विचारों के कारण ही दौलत उनकी ओर आकर्षित

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

होती है। यह सक्रिय आकर्षण का नियम है।

रहस्य और सक्रिय आकर्षण के नियम को बताने का एक आदर्श उदाहरण यह है : आप ऐसे लोगों को जानते होंगे, जिन्होंने बहुत सारी दौलत हासिल करके गवाँ दी, लेकिन कुछ समय बाद ही दोबारा हासिल कर ली। ऐसा क्यों हुआ? उन्हें मालूम हो या न हो, लेकिन हुआ यह था कि चूँकि पहले वे दौलत के बारे में प्रबलता से सोचते थे, इसलिए वे उसे हासिल करने में सफल हुए। फिर उन्होंने दौलत गवाँने के डरावने विचारों को अपने दिमाग में आने दिया, जब तक कि वे प्रबल नहीं बन गए। दौलत पाने के विचारों का पलड़ा हल्का हो गया और दौलत गँवाने के विचारों का पलड़ा भारी हो गया। इसी वजह से उन्होंने दौलत गवाँ दी। बहरहाल, दौलत जाने के बाद इसके जाने का डर गायब हो गया और उन्होंने दौलत के प्रबल विचारों से तराजू के सकारात्मक पलड़े को दोबारा भारी कर लिया। और दौलत लौट आई।

आकर्षण का नियम आपके विचारों पर प्रतिक्रिया करता है, चाहे वे जैसे भी हों।

समान चीज़े समान चीज़ों को आकर्षित करती हैं

जॉन असाराफ़

आकर्षण के नियम पर अमल करने का मेरा सबसे आसान तरीका यह है कि मैं खुद को चुंबक मानता हूँ और यह जानता हूँ कि दूसरा चुबंक मेरी तरफ आकर्षित होगा।

आप ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली चुबंक हैं। आपमें ऐसी चुंबकीय शक्ति है, जो दुनिया की किसी भी चीज से ज्यादा शक्तिशाली है और यह अबूझ चुबंकीय शक्ति आपके विचारों को संप्रेषित होती है।

बॉब डॉयल

लेखक और आकर्षण के नियम के विशेषज्ञ

मूलभूत रूप से, आकर्षण का नियम यह कहता है कि समान चीज़ें समान चीज़ों को आकर्षित करती हैं। यानी हम दरअसल विचार के एक ही स्तर पर बात कर रहे हैं।

आकर्षण का नियम कहता है कि समान चीज़ें को आकर्षित करती हैं। इसका मतलब यह है कि जब आप कोई विचार सोचते हैं, तो ाप उसी जैसे अन्य विचारों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। आपने अपने जीवन में आकर्षण के नियम के संदर्भ में यह अनुभव किया होगा :

आप कभी किसी ऐसी चीज़ के बारे में सोचने लगे हों, जिससे आप खुश नहीं थे। आपने उसके बारे में जितना ज्यादा सोचा, वह उतनी ही ज्यादा बुरी लगने लगी। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि जब आप लगातार एक ही विचार सोचते हैं, तो आकर्षण का नियम तत्काल उसी जैसे दूसरे विचार आपकी ओर लाने लगता है। चंद मिनटों में ही आपके दिमाग में इतने सारे दुखद विचार भर जाएँगे कि स्थिति पहले से ज्यादा बुरी दिखने लगेगी। आप इस बारे में जितना ज्यादा सोचेंगे, उतने ही ज्यादा परेशान होंगे।

हो सकता है, आपको समान विचारों को आकर्षित करने का नीचे दिया अनुभव भी हुआ हो। हो सकता है, कोई गाना सुनने के बाद आप उसे अपने दिमाग से बाहर नहीं निकाल पाए हों। वह गाना आपके दिमाग में बार–बार बजता रहा होगा। हो सकता है आपको मालूम भी न हो, लेकिन वह गाना सुनते समय आपने उस पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित कर लिया था। ऐसा करके आप उस गाने के विचार जैसे अन्य विचारों को सशक्त रूप से आकर्षित कर रहे थे, इसलिए आकर्षण का नियम सक्रिय हो गया और उसने उस गाने के विचार से मिलते–जुलते विचारों को आपकी ओर आकर्षित कर दिया।

जॉन असाराफ़

इंसान के रूप में हमारा काम अपने दिमाग में ऐसे विचार रखना है, जिन्हें हम चाहते हैं। हमें इस बारे में बिलकुल स्पष्ट होना चाहिए कि हम क्या चाहते हैं। ऐसा करके हम ब्रह्मांड के महानतम नियमों में से एक को सक्रिय कर देते हैं, जो आकर्षण का नियम है। आप जिस बारे में सबसे ज्यादा सोचते हैं, वही बन जाते हैं। आप जिस वस्तु या व्यक्ति के बारे में सबसे ज्यादा सोचते हैं, उसे अपनी ओर आकर्षित भी करते हैं।

आपका वर्तमान जीवन आपके पुराने विचारों का प्रतिबिंब है। इसमें आपके पास मौजूद सारी अच्छी चीज़ें शामिल हैं और वे चीज़े भी, जो शायद उतनी अच्छी नहीं हैं। चूँकि आप अपनी ओर उसे आकर्षित करते हैं, जिसके बारे में आप सबसे ज्यादा सोचते हैं, इसलिए यह आसानी से पता चल सकता है कि जीवन के हर क्षेत्र के बारे में आपके प्रबल विचार क्या हैं, क्योंकि वे हकीकत में बदल चुके हैं। अब तक! अब आप रहस्य सीख रहे हैं और इस पर अमल करके हर चीज़ बदल सकते हैं।

बॉब प्रॉक्टर

अगर आप अपने दिमाग में कोई चीज देख सकें, तो वह आपके हाथ में आ जाएगी।

अगर आप अपने दिमाग में सोच लें कि आप क्या चाहते हैं और उसे अपना प्रबल विचार बना लें, तो वह चीज़ आपके जीवन में प्रकट हो जाएगी।

माइक डूली

लेखक और अंतर्राष्ट्रीय वक्ता

यह सिद्धांत संक्षेप में पाँच सरल शब्दों में बताया जा सकता है। विचार वस्तु बन जाते हैं।

इस सबसे शक्तिशाली नियम से आपके विचार आपके जीवन की वस्तुओं के रूप में साकार हो जाते हैं। विचार वस्तु बन जाते हैं। यह सूत्र बार–बार दोहराएँ और इसे अपनी चेतना तथा जागरूकता में उतर जाने दें। आपके विचार वस्तुएँ बन जाते हैं।

जॉन असाराफ़

ज्यादातर लोग यह नहीं समझते हैं कि हर विचार की एक फ़्रीक्वेन्सी होती है। हम विचार को माप सकते हैं। इसलिए अगर आप बार–बार एक ही चीज के बारे में सोच रहे हैं, अपने दिमाग में उस चमचमाती नई कार का मालिक बनने की कल्पना कर रहे हैं, उस पैसे का मालिक बनने की जिसकी आपको जरूरत है, कंपनी बनाने की, आदर्श जीवनसाथी पाने की ... अगर आप उसे कल्पना में देख रहे हैं, तो आप उस फ्रीक्वेन्सी को लगातार संप्रेषित कर रहे हैं।

डॉ. जो विटाल

विचार चुंबकीय संकेत भेजते हैं, जो उस जैसी चीज़ को आपकी ओर आकर्षितत करते हैं।

''प्रबल विचार या मानसिक दृष्टिकोण चुंबक है। नियम यह है कि समान चीज़ें समान चीज़ों को आकर्षित करती है। परिणामस्वरूप, मानसिक दृष्टिकोण हमेशा अपनी प्रकृति के अनुरूप स्थितियों को आकर्षित करेगा।''

चार्ल्स हानेल (1866–1949)

विचार चुंबकीय होते हैं और विचारों की एक फ्रीक्वेन्सी होती है। जब आप सोचते हैं, तो वे विचार संप्रेषित होकर ब्रह्मांड में पहुँच जाते हैं और चुंबक की तरह समान फ्रीक्वेन्सी वाली चीजों को आकर्षित करते हैं। हर भेजी गई चीज़ स्त्रोत तक वापस लौटती है। और वह स्त्रोत आप हैं।

इसके बारे में इस तरह से सोचें : हम जानते हैं कि किसी टेलीविजन स्टेशन का ट्रांसमिशन टॉवर एक फ्रीक्वेन्सी पर प्रसारण करता है, जो आपके टेलीविजन की तस्वीरों में बदल जाती है। सच तो यह है कि हममें से ज्यादातर लोग यह नहीं समझ पाते हैं कि यह कैसे होता है, लेकिन हम इतना जरूर जानते हैं कि हर चैनल की एक फ्रीक्वेन्सी होती है और जब हम उस फ्रीक्वेन्सी पर चैनल सेट करते हैं, तो हमें अपने टेलीविजन पर तस्वीरें दिखने लगती हैं। हम चैनल चुनकर फ्रीक्वेन्सी चुनते हैं और इसके बाद हमें उस चैनल पर प्रसारित होने वाली तस्वीरें मिलती हैं। अगर हम अपने टेलीविजन पर अलग तस्वीरें देखना चाहते हैं, तो हम चैनल बदल देते हैं और उसे नई फ्रीक्वेन्सी पर सेट कर देते हैं।

आप मानवीय ट्रांसमिशन टॉवर हैं और धरती पर बने किसी भी टेलीविजन टॉवर से ज्यादा शक्तिशाली हैं। आप ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली ट्रांसमिशन टॉवर हैं। आपका ट्रांसमिशन आपके जीवन और संसार की रचना करता है। आपके द्वारा प्रसारित फ्रीक्वेन्सी शहरों, देशों, संसार के पार पहुँच जाती है। वह पूरे ब्रह्मांड में गूँजने लगती है। और उस फ्रीक्वेन्सी को आप अपने ही विचारों से प्रसारित कर रहे हैं।

आपके विचारों के प्रसारण से आपको जो तस्वीरें मिलती हैं, वे आपके लिविंग रूम के टेलीविजन स्क्रीन पर नहीं दिखती हैं। वे तस्वीरें तो आपके जीवन में दिखती हैं। आपके विचार फ्रीक्वेन्सी सेट करते हैं, उस फ्रीक्वेन्सी पर मौजूद समान चीजों को आकर्षित करते हैं और फिर आपके विचारों को जीवन की तस्वीरों के रूप में आपकी ओर प्रसारित कर देते हैं। अगर आप अपने जीवन की किसी भी चीज़ को बदलना चाहते हैं, तो अपने विचार बदलकर चैनल और फ्रीक्वेन्सी बदल दें।

''मानसिक शक्तियों के कंपन ब्रह्मांड में सर्वश्रेष्ठ और सबसे शक्तिशाली होते हैं।''

चार्ल्स हानेल

बॉब प्रॉक्टर

अगर आप समृद्ध जीवन जीने की कल्पना करेंगे, तो आप इसे आकर्षित कर लेंगे। यह सिद्धांत हर बार, हर इंसान के मामले में काम करता है।

जब आप अपने समृद्ध जीवन की कल्पना करते हैं, तो आप आकर्षण के नियम द्वारा सशक्त और सचेतन रूप से अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं। यह काम इतना ही आसान है। लेकिन फिर सबसे स्पष्ट सवाल आता है, ''हर व्यक्ति अपने सपनों की जिंदगी क्यों नहीं जी रहा है?''

बुरे के बजाय अच्छे को आकर्षित करें

जॉन असाराफ़

यही समस्या है। ज्यादातर लोग इस बारे में सोच रहे हैं कि वे क्या नहीं चाहते हैं और फिर इस बात पर हैरान हो रहे हैं कि उनके साथ बार–बार बुरी चीज़े क्यों होती हैं।

लोगों को उनकी मनचाही चीज़ें नहीं मिलने का एकमात्र कारण यह है कि वे इस बारे में ज्यादा सोच रहे हैं कि वे क्या नहीं चाहते हैं, बजाय इसके कि वे क्या चाहते हैं। अपने विचारों पर गौर करें और अपने शब्दों को सुनें। नियम शाश्वत है और इसमें कहीं चूक नहीं होती है।

मानव जाति में सदियों से एक महामारी फली है, जो प्लेग से ज्यादा भयंकर है। यह ''नहीं चाहता'' की महामारी है। लोग इस महामारी को बढ़ावा देते हैं, जब वे उन चीजों पर प्रबलता से सोचते, बोलते, काम करते और ध्यान केंद्रित करते हैं, जिन्हें वे ''नहीं चाहते।'' लेकिन यह पीढ़ी इतिहास बदल देगी, क्योंकि हमें यह ज्ञान मिल रहा है, जो इस महामारी से मुक्ति दिला सकता है। यह आपसे शुरू होता है और आप इस नए वैचारिक आंदोलन के प्रवर्तक बन सकते हैं। इसके लिए आपको बस यह सोचना और बोलना है, जो आप चाहते हैं।

बॉब डॉयल

आकर्षण का नियम इस बात की परवाह नहीं करता है कि आप किसी चीज़ को अच्छा मानते हैं या बुरा आप उसे चाहते हैं या नहीं। यह नियम तो आपके विचारों पर प्रतिक्रिया करता है। इसलिए अगर आप कर्ज के पहाड़ को देखकर बुरा महसूस कर रहे हैं, तो आप ब्रह्मांड में यह संकेत भेज रहे हैं, ''मैं इतने भारी कर्ज से बुरा महसूस कर रहा हूँ।'' आप खुद से यह बात दृढ़ता से कह रहे हैं। आप इसे अपने अस्तित्व के हर स्तर पर महसूस कर रहे हैं। परिणाम : आपको यही चीज़ और ज्यादा मिलेगी।

आकर्षण का नियम नैसर्गिक नियम है। यह निष्पक्ष है और अच्छी या बुरी चीजों में भेद नहीं करता है। यह आपके विचारों को आपके जीवन में साकार कर देता है। आप जिस भी बारे में सोचते हैं, आकर्षण का नियम आपको वही देता है।

साभार :
रहस्य
पेज संख्या 1 से 13 तक
रॉन्डा बर्न

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

धर्मचक्र प्रवर्तन अष्टांगिक–मार्ग या सम्यक्मार्ग

1. इसके आगे बुद्ध ने उन परिब्राजकों को अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया। बुद्ध ने कहा – इस मार्ग के आठ अंग हैं।

2. बुद्ध ने सर्वप्रथम सम्मा दिट्ठी (=सम्यक् दृष्टि) की व्याख्या की जो अष्टांगिक मार्ग में प्रथम है और प्रधान है।

3. सम्यक् दृष्टि का महत्व समझाने के लिये बुद्ध ने परिब्राजकों से कहा :–

4. 'हे परिब्राजको! तुम्हे इस का बोध होना चाहिये कि यह संसार एक कारागार है और आदमी इस कारागार में एक कैदी है।

5. इस कारागार में इतना अधिक अन्धकार है कि यहां कुछ भी दिखाई नहीं देता। कैदी को यह तक दिखाई नहीं देता कि वह कैदी है।

6. इतना ही नहीं कि बहुत अधिक समय तक इस अन्धेरी कोठरी में ही पड़े रहने के कारण आदमी एकदम अन्धा हो गया हो, बल्कि उसे इस बात में भी बड़ा सन्देह हो गया है कि प्रकाश नाम की कोई चीज भी कभी कहीं हो सकती है।

7. मन ही एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से आदमी को प्रकाश की प्राप्ति हो सकती है।

8. लेकिन इन कारागार–वासियों के दिमाग की भी अवस्था ऐसी नहीं है कि यह उद्देश्य पूरा हो सके।

9. इनका दिमाग जरासा प्रकाश मात्र आने देता है, इतना ही है कि जिनके पास आँख है वह यह देख सकें कि अन्धकार नाम की भी कोई वस्तु है।

10. इसलिये ऐसी समझ बड़ी सदोष है।

11. लेकिन हे परिब्राजको! कैदी की स्थिति ऐसी निराशाजनक नहीं है जैसी यह प्रतीत होती है।

12. क्योंकि आदमी में एक बल है, एक शक्ति है जिसे संकल्प–बल या इच्छा–शक्ति कहा जाता है। जब आदमी के सम्मुख कोई उपयुक्त आदर्श उपस्थित होता है तो इस इच्छा–शक्ति को जाग्रत और क्रिया–शील बनाया जा सकता है।

13. आदमी को यदि कहीं से इतना भी प्रकाश मिल जाये कि वह यह देख सके कि उसे अपनी इच्छा–शक्ति को किस दिशा में अग्रसर करना चाहिये, तो आदमी अपनी इच्छा–शक्ति का ऐसा संचालन कर सकता है कि वह अन्त में उसे बन्धन–मुक्त कर दे।

14. इसलिये यद्यपि आदमी बन्धन में है तो भी वह स्वतन्त्र हो सकता है; वह किसी भी समय ऐसा पहला कदम उठा सकता है कि एक न एक दिन व स्वतन्त्र होकर रहे।

15. यह इसलिये कि हम जिस किसी दिशा में भी अपने मन को ले जाना चाहे, हम उसे उस दिशा में ले जा सकते हैं। मन ही है जो हमें जीवन–रूपी कारागार का कैदी बनाता है और यह मन ही है जो हमें कैदी बनाये रखता है।

16. लेकिन मन ने ही जिसे बनाया है, मन ही उसे नष्ट भी कर सकता है, मन अपनी कृति को मटियामेट भी कर सकता है। यदि इसने आदमी को बंधन में बांधा है तो ठीक दिशा में अग्रसर होने पर यही आदमी को बंधन–मुक्त कर सकता है।

17. यह है जो सम्यक् दृष्टि कर सकती है।

18. तब परिब्राजकों ने प्रश्न किया ''सम्यक् दृष्टि का अन्तिम उद्देश्य क्या है?'' बुद्ध ने उत्तर दिया– ''अविद्या का विनाश ही सम्यक्–दृष्टि का उद्देश्य है। यह मिथ्या–दृष्टि की विरोधिनी है।

19. ''और अविद्या का अर्थ है कि आदमी दुःख को न जान सके, आदमी दुःख के निरोध के उपाय को न जान सके, आदमी इन आर्य–सत्यों को न जान सके।

20. सम्यक् दृष्टि का मतलब है कि आदमी कर्म–काण्ड के क्रिया–कलाप को व्यर्थ समझे, आदमी शास्त्रों की पवित्रता की मिथ्या–धारण से मुक्त हो।

21. सम्यक् दृष्टि का मतलब है कि आदमी मिथ्या–विश्वास से मुक्त हो, आदमी यह न समझता रहे कि कोई भी बात प्रकृति के नियमों के विरूद्ध घट सकती है।

22. सम्यक् दृष्टि का मतलब है कि आदमी ऐसी सब मिथ्या–धारणाओं से मुक्त हो जो आदमी के मन की कल्पना–मात्र हैं और जिनका आदमी के अनुभव या यथार्थता से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं।

23. सम्यक्–दृष्टि का मतलब है कि आदमी का मन स्वतन्त्र हो, आदमी के विचार स्वतन्त्र हों।

24. हर आदमी की कुछ आशायें होती हैं, आकांक्षायें होती हैं, महत्वाकांक्षायें होती हैं। सम्यक् संकल्प का मतलब है कि हमारी आशायें, हमारी आकांक्षायें ऊंचे स्तर की हों, निम्नस्तर की न हों, हमारे योग्य हों, अयोग्य न हों।

25. सम्यक्वाणी का मतलब है कि आदमी (1) सत्य ही बोले, (2) आदमी असत्य न बोले, (3) आदमी दूसरों की बुराई न करता फिरे, (4) आदमी दूसरों के बारे में झूठी बातें न फैलाता फिरे, (5) आदमी किसी के प्रति गाली–गलौज का वा कठोर वचनों का व्यवहार न करें, (6) आदमी सभी के साथ विनम्र वाणी का व्यवहार करे, (7) आदमी व्यर्थ की, बेमतलब मूर्खतापूर्ण बातें न करता रहे, बल्कि उसकी वाणी बुद्धिसंगत हो, सार्थक हो और सोद्देश्य हो।

26. जैसा मैंने समझाया सम्यक्–वाणी का व्यवहार न किसी के भय की अपेक्षा रखता है, और न किसी के पक्षपात की। इसका इससे कुछ भी सम्बन्ध नही होना चाहिये कि कोई ''बड़ा आदमी'' उसके बारे में क्या सोचने लगेगा अथवा सम्यक्वाणी के व्यवहार से उसकी क्या हानि हो सकती है।

27. सम्यक्वाणी का माप–दण्ड न किसी ''ऊपर के आदमी'' की आज्ञा है, और न किसी व्यक्ति को हो सकनेवाला व्यक्तिगत लाभ।

28. सम्यक्–कर्मान्त योग्य व्यवहार की शिक्षा देता है। हमारा हर कार्य ऐसा हो जिसके करते समय हम दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का ख्याल रखें।

29. सम्यक्–कर्मान्त का माप–दण्ड क्या है? सम्यक् कर्मान्त का माप–दण्ड यही है कि हमारा कार्य जीवन के जो मुख्य नियम हैं उनसे अधिक से अधिक समन्वय रखता हो।

30. जब किसी आदमी के कार्य इन नियमों से समन्वय रखते हों, तो उन्हें हम सम्यक्–कर्म कह सकते हैं।

31. प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका कमानी ही होती है। लेकिन जीविका कमाने के ढंगों में अन्तर हैं। कुछ बुरे हैं, कुछ भले हैं। बुरे ढंग वे हैं जिनसे किसी की हानि होती है अथवा किसी के प्रति अन्याय होता है। अच्छे ढंग वे हैं जिनसे आदमी बिना किसी को हानि पहुंचाये अथवा बिना किसी के साथ अन्याय किये अपनी जीविका कमा सकता है। यही सम्यक्–आजीविका है।

32. सम्यक् व्यायाम; अविद्या को नष्ट करने के प्रयास की प्रथम सीढ़ी है, इस दुःखद कारागार के द्वार तक पहुंचने का रास्ता ताकि उसे खोला जा सके।

33. सम्यक्–व्यायाम के चार उद्देश्य हैं।

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

34. एक है अष्टांगिक–मार्ग विरोधी चित्त–प्रवृत्तियों की उत्पत्ति को रोकना।

35. दूसरा है ऐसी चित्त–प्रवृत्तियों को दबाना जो उत्पन्न हो गई हों।

36. तीसरा है ऐसी चित्त–प्रवृत्तियों को उत्पन्न करना जो अष्टांगिक मार्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति की सहायक हों।

37. चौथा है ऐसी उत्पन्न चित्त–प्रवृत्तियों में और भी अधिक वृद्धि करना तथा उनका विकास करना।

38. सम्यक् स्मृति का मतलब है हर बात पर ध्यान दे सकता। यह मन की सतत् जागरूकता है। मन में जो अकुशल विचार उठते हैं, उनकी चौकीदारी करना सम्यक्स्मृति का ही एक दूसरा नाम है।

39. ''हे परिब्राजको! जो आदमी सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक–व्यायाम और सम्यक् स्मृति को प्राप्त करना चाहता है, उसके मार्ग में पांच बाधाएँ या बन्धन आते हैं।''

40. ये है लोभ, द्वेष, आलस्य, विचिकित्सा तथा अनिश्चय इन बांधाओं को जो वास्तव में कड़े बंधन ही हैं जीत लेना या तोड़ना आवश्यक है। इन बंधनों से मुक्त होने का उपाय समाधि है। लेकिन परिब्राजको! यह समझ लेना चाहिये कि समाधि और 'सम्यक् समाधि' एक ही बात नहीं। दोनों में बड़ा अन्तर है।

41. समाधि का मतलब है केवल चित्त की एकाग्रता। इसमें सन्देह नहीं कि इससे वैसे ध्यानों को प्राप्त किया जा सकता है कि जिनके रहते ये पांचों संयोजन या बन्ध स्थगित रहते है।

42. लेकिन ध्यान की ये अवस्थायें अस्थायी हैं। इसलिये संयोजन या बंधन भी अस्थायी तौर पर ही स्थगित रहते हैं। आवश्यकता है चित्त में स्थायी परिवर्तन लाने की। इस प्रकार का स्थायी–परिवर्तन सम्यक् समाधि के द्वारा ही लाया जा सकता है।

43. खाली समाधि एक नकारात्मक स्थिति है, क्योंकि यह इतना ही तो करती है कि संयोजनों को अस्थायी तौर पर स्थगित रखे। इसमें मन का स्थायी परिवर्तन निहित नहीं है। सम्यक् समाधि एक भावात्मक वस्तु है। यह मन को कुशल–कर्मों का एकाग्रता के साथ चिन्तन करने का अभ्यास डालती है, और इस प्रकार मन की संयोजनोत्पन्न अकुशल–कर्मों की ओर आकर्षित होने की प्रवृत्ति को ही समाप्त कर देती है।

44. सम्यक् समाधि मन को कुशल और हमेशा कुशल की कुशल (भलाई ही भलाई) सोचने की आदत डाल देती है। सम्यक् समाधि मन को वह अपेक्षित शक्ति देती है, जिससे आदमी कल्याणरत रह सके।

साभार – भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पृष्ठ सं. 97 से 100
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।